शंकर कह रहे हैं। श्री जैन सा० का
श्री जयशंकर स्नान हो, उनका स्वा-
स्थ्य पहले की अपेक्षा कुछ ठीक है
शेष कुशल है। श्री वैद्य जी, ठेकेदार
जी, श्री मास्टर जी, श्री वैद्य जी
के पिताजी, बहनोई जी आदि
सभी को जय श्री गोविन्द।

पोस्ट कार्ड
केवल पता

वैद्य श्री बृहस्पति देव (त्रिगुणा)
भोगल रोड पो० जंगपुरा
दिल्ली नं० 14

श्री:। चौबुर्जा-भरतपुर
२१-३-६१

अनन्त श्री बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में सादर कोटि-शः प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वतः कुशलमस्तु। आपका कुशल समाचार न आने से चिन्ता है कृपया कुशल पत्र अवश्य शीघ्र प्रदान करें।

परमादरणीय श्री ज्योतिषी-जी महाराज का स्वास्थ्य अभी तनिक भी नहीं सुधरा है वाँये पैर में कटि से नीचे कूल्हे में चोट है खाते-पीते नहीं हैं ३ दिन से शौच भी नहीं गये हैं, वे आपको जय-

श्री कं० बाबूरामजी आदि सभी से जयश्रीकृष्ण कहें।
अब नैमित्तक आरम्भ करेंगे, श्री श्रोत्रि०-जी की तरफ
एक बार और मिल आऊं। आप का स्वास्थ्य आशा है
ठीक होगा, कथा आरंभ हो गई होगी, अपना
स्वास्थ्य समाचार अवश्य दें। शेष कुशल है
श्री जैन साहब आपको प्रणाम लिखवाते हैं
गृहिणी भी अभी अस्वस्थ सी ही है। पत्रोत्तर
अवश्य ही देने का कष्ट करें। वे पते भी मुझे
नहीं लिखाये गये आप ही पत्र लिख दें।
श्री चरणों की जय हो। आपका
भिक्षुगोविन्द:



पोस्ट कार्ड
POST CARD
जवाबी
REPLY
केवल पता
ADDRESS ONLY

C/o
श्रीमान्
वैद्य बृहस्पति देव (त्रिगुणा)
मोगलरोड पो० जंगपुरा
देहली 14

समय मध्यान्होत्तर श्री: - चौबुर्जी-भरतपुर
३ बजे

१७-३-६१

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र पूज्य पादारविन्द के
पुनीत पाद पद्मों में कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों।
सर्वतः कुशलं सत्यं शिवं सुन्दरमेव च। मैं यहां
सानन्द आ पहुँचा हूं, यहां आते ही समाचार मिला कि
परमादरणीय श्री ज्योतिषी महाराज गत कल बाजार
जाते हुए मसजिद के समीप गिर गये और बांये पैर में कटि
के समीप कूल्हे में अधिक चोट आई उठ बैठ नहीं सकते
हैं कष्ट अत्याधिक है कल से कुछ खाया पिया भी
नहीं है शौच मूत्र नहीं कर सकते हैं इसी भय से नहीं
खाया है प्रातः काल से दुःख में फँस जाने से अभी नित्य
कृत्य से निवृत्त हुआ नहीं था कि श्री जैन सा० का आ-
वश्यक बुलावा पहुँच गया यहां आने पर उन्होंने
आज रात प्रातः कालीन समय का यह स्वप्न
सुनाया कि उनकी धर्मपत्नी के ललाट में लगी
सौभाग्य की बिन्दी गिर गयी और दुबारा लगाई तो
नहीं पुनः गिरी इसके बाद वे जाग गये और हाथ पैर
ठण्डे पड़ गये कोरामीन और दवाई लेने से हृदय में
कुछ शान्ति आयी अब वे शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ हैं
ज्वर भी नहीं है कुछ भूख भी लगी थी और साबूदाने
की खीर भी बनवा कर खाई है। चिन्ता की कोई बात

नहीं है आपकी दया से सब ठीक है।
मा० ला० श्री भगवान दास जी श्री पं० द्वारिका दत्त जी

श्री गुरुकृपा से सब ठीक है/ शेष कुशल/

आपका—

गोविन्द:

श्री वैद्य जी, केदार जी

श्री मास्टर जी आदि को

नमस्कार

पोस्ट कार्ड

POST CARD

साथ का कार्ड जवाब के लिए

THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER

केवल पता

ADDRESS ONLY



"श्री जी"

C/O

वैद्य बृहस्पतिदेव (त्रिगुणा)

मोगलरोड पो. जंगपुरा

दिल्ली नं० १४

श्री:। नौबुर्जा - भरतपुर
२७-१-६१

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र "श्रीजी" के पुनीत पाद
पद्मों में दासानुदास के कोटिश: प्रणाम स्वीकृत हों।
सर्वत: कुशलमस्तु। मैं यहां सकुशल आ पहुंचा हूं
मार्ग में घबराहट अवश्य अधिक रहा। अस्तु यहां आते
ही श्री मनोहरलाल मास्टर गुप्ता की धर्मपत्नी के
देहावसान का समाचार सुना सुनते ही सन्नाटा
छा गया। आज प्रात: अस्थिसंचय में भी गया था।
अस्तु यह जो कुछ भी हुआ सो तो हुआ ही किन्तु
मनोहर ने ३ दिन से अन्न खाया ही नहीं है
केवल दूध चाय ले रहा है और आगे भी
फल दूध आदि लेते रहने की सोच रहा है
मैंने कुछ समझाया भी परन्तु अभी समझा नहीं
जो भगवान की इच्छा। शेष कुशल है।

श्री जैन साहब आपको अनेकों प्रणाम
कह रहे हैं।

श्री मोती भाई आपको सादर प्रणाम
निवेदन पूर्वक कुशलता पूछ रहे हैं
अपने दर्द के बारे में कह रहे हैं कि

Behrampur.

7.3.64.

आदरणीय वीर जी,

सादर नमस्ते।

आपके पत्र का उत्तर तो मैंने दे दिया था शायद आपको मिल गया होगा। मैं सरोज रानी की जन्म कुण्डली भेज रही हूँ इसमें तारीख, प्रविष्ठा, दिन, सब कुछ लिखा हुआ है। स्वामी जी महाराज लड़के-लड़की की कुण्डली का मेलान करके फिर हमें पता देना। और यहाँ सब ठीक है। राज कुमार के और कीता राम के बच्चों का प्रणाम जी और शान्ती देवी का स्वामी जी महाराज के चरण कमलों में प्रणाम स्वीकार हो।

~~कुण्डली के~~

आपकी बहन

रुक्मणी देवी

ॐ श्रीगणेशाय नमः

शुभसंवत विक्रमादित्य संवत ॥२००२॥

सन ईसवि १९४५॥ तारीख १३॥ पुगस्त

सन ईसवि॥१९॥४५॥ श्रा वण मासे कृष्ण

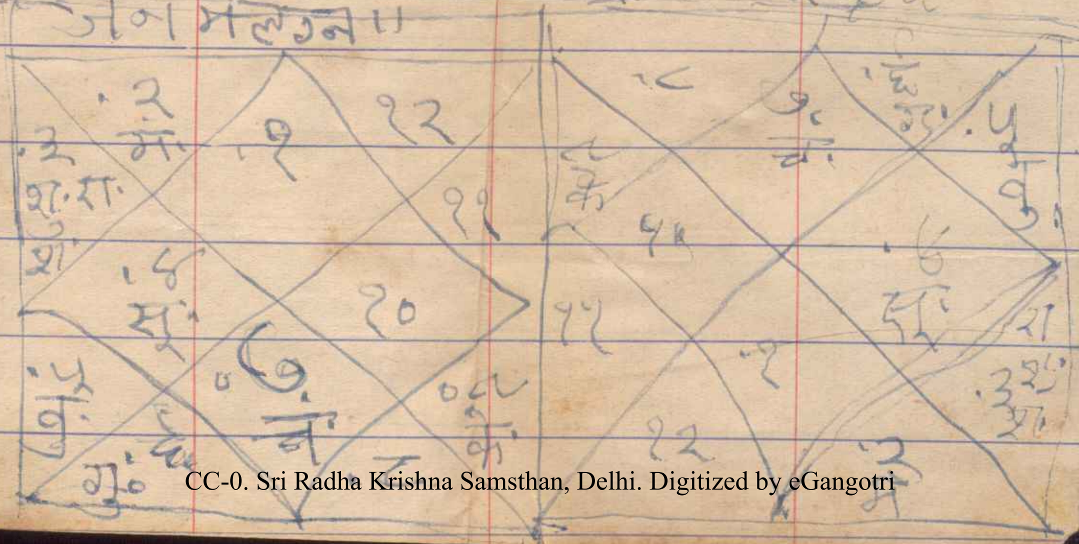
पक्षे पंचम्यां चंद्रदिन ॥१७॥३३॥

को कैऽ कं प्रविष्टा २९॥ सूर्योदय इष्ट ॥४४॥१०

मेष लग्ने उदे जनम पंडत कुल वंतरे गृहे

कन्या जनम शुभा भक्ता चँद्र च

जनम लग्न ॥



सं॰ 2002 शा॰ १८६७

मि॰ भाद्रवदी ५

सोम भाट २३।४४

चित्रा नक्षत्र ६०।००

साध्य मे २०।०७ बालव

कौ २३।२०

ता॰ 23 अगस्त सं १९४५

श्री. स्वामी को [illegible] अति शीघ्र

[illegible]

[illegible] आप की [illegible]

[illegible]

श्री [illegible]

अनन्त श्री पूज्य [illegible] महाराज के पुनीत
पाद पद्मों में [illegible] दास [illegible] प्रणाम
स्वीकृत हो। सं[illegible] कुशल [illegible] | आज रात्रि को
पुजारी [illegible] राम जी यहां पधारे हैं उनसे आपके पत्र के
समाचार ज्ञात हुए। उत्तर में प्रार्थना यह है कि
कुंभ का समय समीप आगया है और आपकी
चरण कृपा से कार्य बहुत अच्छा चल रहा है अत:
वृन्दावन पधारने की ही कृपा करें। यहीं [illegible]
रहेगा क्योंकि घृत दुग्ध आदि सबका प्रबन्ध
प्रबन्ध हो गया है और आज कल यहां मच्छर
आदि भी नहीं हैं। यह सब श्री पू. [illegible] जी के
आग्रह से लिखे हैं और मेरी भी यही [illegible]
[illegible] है। इसके पश्चात् [illegible] सोची
जायगी अब आप अति शीघ्र पधारने की
कृपा करेंगे ऐसी आशा है। [illegible] पत्र
पत्र [illegible] श्री [illegible] मिल गये होंगे।
श्री [illegible] [illegible] शान्ति

का विचार [illegible] है।

परम श्रद्धेय।

सा. प्रणिपात।

मैं लगभग २ महीने से यहाँ हूँ अल्मोड़ा [illegible]। लगभग १५-२० दिन और रहूँगा। उधर भी दर्शनार्थ उपस्थित होने का विचार था। किंतु अस्वस्थ सा हूँ। श्री गिरिजाशरण जी को लक्ष्य का, तथा उनके दो बच्चों को मोतीझला हो गया था। अब स्वास्थ्य ठीक है।

कई माह से अस्वस्थ रहने के कारण कुछ बन नहीं रहा। आपकी कृपा हो और आशीर्वाद मिले तो कुछ चले। और क्या। पत्नी भी अभी अस्वस्थ ही है। पहिले से कुछ लाभ तो है।

आशीर्वादाभिलाषी,

[illegible] शर्मा

(मुम्बई से श्री जयपालजी का पत्र आया था उसमें उन्होंने अपने भाई श्री सत्यपाल छाबड़ा के लिये मृत्युंजय जप कराने को लिखा था उसके उत्तर में मैंने उनको आपके कप्तान साहब से ही करने को लिखा और यह भी [illegible] [illegible] पता आने पर सूचित करूंगा [illegible] को पत्र [illegible]

जिसमें उन्होंने मुझे उसे [illegible] करा आग्रह किया है मैंने अभी कोई उत्तर नहीं दिया है मेरा निवेदन यह है कि इस बारे में जैसा आप मनोनीत किया है वही ठीक रहेगा शुक्लोदय [illegible] आरम्भ करा दीजिये, आज्ञा हो तो मैं उन्हें आपका पता भे[ज] मैं उन्हें कल पत्रोत्तर दूंगा जिसमें शुभ आरम्भ का मुहूर्त लिखूंगा।

उचित हो तो श्री १.५ मान्यवर राजा साहब को [illegible] कह दें। श्री राजोपाध्याय जी को भी आपकी [illegible] श्री कस्तूरीलालजी ने आपके समाचार जानके पत्र लिखा है। श्री पं० हरिरामजी के कोई [illegible] नहीं मिले। का। १ श्री स्वाध्याय सदन की [illegible] मैं तो वहां पड़ा रहूँगा अधिक क्या लिखा श्री १.५ मान्यवर के इस बारे में कुछ विचार [illegible] उचित हो तो कहें आ[illegible] [illegible] है कृपा पत्र अवश्य [illegible]

मध्याह्नोत्तर ५ बजे   १६-६-६४

अनन्त श्री विभूषित श्री पाद पद्मों में दासानुदास के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वत्र कुशल वाञ्छा। अभी २ कृपापत्र प्राप्त हुआ बड़ी प्रसन्नता हुई इससे पहले एक पत्र सिमला भी लिखा है न जाने आपको कैसे नहीं मिला। श्री पुरोहितजी का सादर प्रणाम स्वीकार हो, श्री लखनजी मुम्बई गये हैं। श्री जैन सा० २०-६-६४ को पालनपुर, आबू-बम्बई जायेंगे, उनका भी अभिवादन ज्ञात हो। श्री पं० मदन लालजी, श्री ज्योतिषीजी का जय श्रीकृष्ण ज्ञात हो। (श्री मनोहर गुप्त मास्टर की माताजी का देहावसान हो गया है) श्री पं० मनोहर लालजी नगरवालों का सादर प्रणाम स्वीकार हो, उन्हें पूर्ण विश्वास है कि आपकी कृपासे दीर्घायु बने रहेंगे यह उन्हीं के शब्द हैं। श्री वीरेश्वर धर्मेश्वर दोनों का सादर साष्टांग प्रणाम स्वीकार हो, नरना

अभी कोई उत्तर नहीं आ





अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

१६/६/६४

अनन्त श्री विभूषित "श्री" जी
c/o
श्रीमान् १०८ राजा भारत श्री दुर्गासिंहजी
पो: सोलन (शिमला) हिमाचल
SOLAN (SIMLA)

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

पहला मोड़ First fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

गोविन्द मिश्र
...
भरतपुर

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये   NO ENCLOSURES ALLOWED

"श्री"

गिरधर
भरतपुर
१५.८.६०

पूज्यश्री महामहिम "श्री श्री श्री"
महाराज
सादर चरण स्पर्श

स्वस्ति कुशलमस्तु

पहले भी आपकी सेवा में एक पत्र [illegible] के प्रेत
[illegible] चुका है शायद वह आपको मिल गया हो
यदि वह [illegible] प्राप्त नहीं हुआ हो तो उस का ही
पत्र में यह लिख [illegible] [illegible] भी
[illegible] डूंगरपुर [illegible]
[illegible]
[illegible] रमानन्द जी [illegible]
[illegible] प्रारम्भ तो [illegible]
[illegible] दशमी [illegible]
में ध्यान आया यह [illegible] जन्म तिथि [illegible]
[illegible] मेरा ~~[illegible]~~ (डूंगरपुर [illegible] राजस्थानी रत्नाकर ना[illegible]
[illegible]सिक पत्र निकालते हैं यह उनका आग्रह है कि आप[illegible]
को अक्टूबर में निकलेगा, उसमें मूल सानुवाद [illegible]
चाहते हैं यह फर्मा कर यह पेपर है और छपे
[illegible] कुछ अधिक प्रतियाँ साथ में निकलवाली जावें
[illegible]टिक कवर अलग से छपा किया जाय तो यह पुस्त[illegible]
[illegible] अलग से उपलब्ध होगा [illegible] प्रतियों के लिये
[illegible] इस बात को [illegible]
विचार आया कि इस बारे में आप से सलाह ली जाय

कि [illegible] प्रेम से [illegible] [illegible] के [illegible]
के [illegible] में [illegible] [illegible] जाय [illegible]
सलाह [illegible] है कि [illegible] लिखने की [illegible]
पूज्य श्री [illegible] जी [illegible] [illegible] जी उनको हम पत्र [illegible]
लिख [illegible] आप सीधे ही [illegible]
[illegible] लिख रहा हूं यहां सब ठीक [illegible]
[illegible] पूज्य श्री [illegible] जी एवं [illegible] जी [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] आपको [illegible]
[illegible] [illegible]
महाराज यह [illegible]
[illegible] पते लिख रहा हूं
[illegible] कृपा करें

जोधपुर का पता यह है

To
पं. श्री रमानन्द सारस्वत
शिवोदय भवन (व्यासजी का नोहरा)
[illegible] विद्यापीठ के पास
[illegible] रोड. सरदारपुरा
जोधपुर

जयपुर मैं स्व... जी ... शरण
आपके आने की राह देख रहे हैं तथा उन्होंने
की आपको प्रणाम लिखा है आप सब को
है मेरा कार्य इस समय आपके आशीर्वाद से
ठीक ही चल रहा है लेकिन करीब एक माह से
वेतन प्राप्त नहीं है आपकी आज्ञानुसार मैंने
... में सहायक ... के लिए काम
... दूर दिया

पूज्य
को जयशंकर ...

त्रुटियों का ...

पत्र की प्रतीक्षा में

ओमप्रकाश शर्मा
तारघर भरतपुर
31/1/...

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



... अग्रवाल
(C-33)
... विस्तार

पिन ...

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

पिन PIN

19/1/76

[illegible]

श्री शुक्रवार को वृन्दावन जाने का विचार है क्योंकि
श्री ब्रह्मचारीजी ने फाल्गुन शुक्ल में मिलने पर पुनः
मिलने को कहा (पुनः मिलने पर नवरात्रों पीछे भरतपुर
आने को नवरात्र [illegible] ते ही उन का पत्र मिला
कि अक्षय तृतीया [illegible] जी महाराज के चरणों के
दर्शन करके [illegible] र आने को लिखा है
अतः शुक्रवार [illegible] हें साथ ही लिवा
लाऊँगा अ [illegible] म जानकर
आ [illegible]
ठहरने को क [illegible] हो तो २-३
मन्दिर से अ [illegible] नहीं है
भिक्षा करके भो [illegible]
श्री गिरिराजशरणजी [illegible] आये हैं उन्होंने "श्रीजी"
को जयपुर पधारने के लिखा है मुझसे भी जयपुर में
बहुत आग्रह किया है उनका भी प्रणाम स्वीकार हो।
श्री जैन सा० सादर प्रणाम निवेदन करते हैं
जैन [illegible] हो गया है।
ता. २१-४-६० को

श्री बाबा गुरमुखसिंह दासजी श्री ता. २८-४-६० को शरीर छोड़ चुके हैं श्री आत्मारामजी

[illegible]

श्री:। चौकुर्जी - भरतपुर

[illegible] २६-४-६०

[illegible]

श्रीमान्

लाला राजकुमार जी। जय शङ्कर। सर्वत: कुशलमस्तु।

आपका पत्र मिला। उ[illegible] कारण यह है कि मैं गत -

रात्रि को ही अजमे[illegible] से आया हूं पहले

दोनों पत्रों की [illegible] थे आप को क्यों

नहीं मिले य[illegible] के कुशल समाचार

जानने को इ[illegible] पूर्व श्री प० श्रीनाथ

नहीं। अनन[illegible] ों में मेरे कोटिश:

प्रणाम निवे[illegible] ने अपने पत्र में यह

लिखा था [illegible] समय नहीं आरहा हूं

आने की सूचना [illegible] के कारण पत्र तथा

श्री जी के स्वस्ति [illegible] में ही था। श्री प० बलजिला

प्रजी को का पत्र तथा १ और पत्र और श्री वैद्य नन्दकिशोर

जी को पत्र सेवार्पित कर देना।

कल यहां श्री परशुराम जयन्ती के उपलक्ष में जुलूस

निकलेगा [illegible] यहां सब रहेगा

शेष कुशल है। अब भरतपुर कब आ रहे हैं। सो सूचना दे देना।

श्री: ।

नालागढ़
दि० 8/5/58

श्री १००८ पूज्यपाद श्री "श्री" जी महाराज
सादर साष्टाङ्ग प्रणाम।

कृपा पत्र प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई,
पत्रोत्तर देने में विलम्ब हुआ कारण कि शिवशर्ण जी
अपने कार्य से बाहर गये हुए थे, कल मेरी
अनुपस्थिति में बाबू हरि राम तथा पाधा शिवशर्ण जी
ने 19 मई को प्रतिष्ठा का महूर्त निश्चित करके
आप की सेवा में पत्र लिखा है जी। यह महूर्त ठीक
है जी या नहीं, यह तो आप ही फैसला फर्मायेंगे।
दवाई के लिए छोटी मक्खी का मधु मिलना कठिन है
न मिला तो क्या दूसरा डाला जावे या नहीं। [illegible]
अभी तक दूध ही नहीं पी सकी, आशा है चार
पांच दिन के पश्चात दधी की आवश्यकता पड़ेगी जी।
रसौंत तैयार है, इस बार आंवले का मुरब्बा भी तय्यार
कराया है, ठीक बना है या नहीं, आप ही जानें,
महन्त बृजदास के साथ आयोजित सन्त सम्मेलन
कथा श्रीमद्भागवत इत्यादि २२ दिन के पश्चात
आदर्श को निर्विघ्न पूर्ण हो गया, श्री भगवती दास
की उस में बड़ी सहायता रही जी। प्रथम पत्र भी
और यह भी दोनों श्री भगवती जी को पढ़ा दिए थे
[illegible] दोनों को भी जय शङ्कर कह दी थी

कु० कृष्णा के विवाहोत्सव की तय्यारी की जा रही है

श्री
मेरा सादर
[illegible]

पर पूर्णता लाने के लिए श्री चरणों को यहां पधारने

का कष्ट करना ही पड़ेगा, ऐसी आशा है,

क्योंकि दो ही तीन दिन पश्चात प्रतिष्ठा का दिन

आ जाता है महाराज अतः यह सब ठीक कराना

श्री चरणों पर ही निर्भर है। आज्ञानुसार तीन स्तोत्र

रत्न पं० अक्षरानन्द जी पढ़ने के लिए बहार भेजे हैं

और शादी पर पधारने के लिये भी उन से प्रार्थना

की गई है पर अभी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है जी।

आज्ञानुसार ६ बजे सुबह ध्यान १० से १५ मिनट बैठता हूं परन्तु

रात को बैठने का अभी प्रबन्ध नहीं हो सका है जी।

अब केवल श्री चरण कमलों की मुझ पर अपार कृपा है

तो कोई कारण नहीं कि मैं सफल न हो सकूंगा

इच्छा तो महाराज बुद्धिहीन पागल बनने की है

कृपा भी उसी रास्ते पर चलाने की की जा रही है कभी

तो अपने लक्ष्य तक पहुंच ही पाऊंगा इस में अब कोई

संशय नहीं रहा है कृपालु।

श्री सत्या-हरबंसी, सन्तोष की तथा मेरी नन्दलाल और

वैद जी और बच्चों की तरफ से प्रणाम स्वीकार हो "

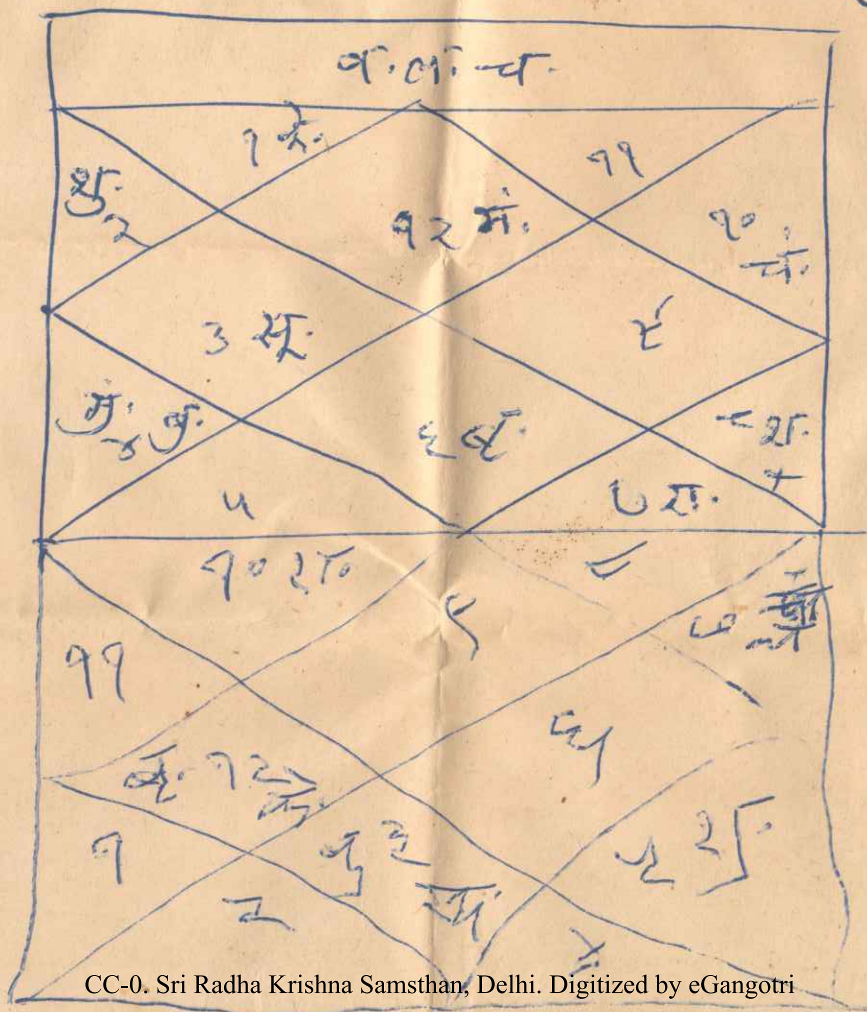
लीलावती, मेहरदेई और सूर्यमणी व हरराम की हरराम

जी और से प्रणाम स्वीकार करें जी। नालागढ़ पधारने की

तारीख से

श्री ॥

शुभ सं० २०१५ शाके: १८८० प्रथम श्रावण कृष्णा २ गुरु विलम्ब ४६।५५।३० सू० २।१६
लग्नम् ११।१८ तदा ऽ स्य प्रावेश: ५८ गते २५



आँगुली की दशा भी भयानक सी होगई है
किन्तु इस स्थिति को देखने की इच्छा करते २
श्री प्रोफेसर साहब भटनागर जी अपने
तबादले पर करौली प्रिन्सिपल होकर
चले गये है, मेरे ख्याल से अब यह अपनी
चरम सीमा पर पहुँच गया है। इस समय
रोग पूर्व वाद्धिपर है यदि यह औषधि
का ही प्रभाव है तो २-४ में ही
लाभ होना शुरू हो जायगा।
शेष आप जाने। श्री पं. मोहर
लाल दण्डवत कहरहे हैं। पहले समाचार
तो श्री लक्खा जी को दे दिये थे अब उसके
बाद के दो तीन दिन ही मिलने पर
कहूँगा। जन्मपत्र की गणित श्री पं.
शालिग्राम जी ने की है कि...

श्री रघो. जी महाराज ने शुरू करदिया है। आप
जितने दिन चाहें वहां का परिभ्रमण करें।
श्री माजी, गृहिणी, चि. नरेश्वर, चि. धर्मेश
श्री शास्त्री परशुराम जी के सादर प्रणाम
जैन सा. बाहर है। श्री विश्वम्भर सिंह
ताऊ जी का देहावसान होने से
गये है। श्री जन्मादिवस को उप
श्री मेरे कोटिशः प्रणाम स्वीकार
श्री बदरी प्रसाद जी सादर जयशङ्कर
आजकल यह आवश्यक चीज खरीद कर देने
जारहे है। श्री पं. रामजीलाल जी
भी प्रणाम कहरहे हैं। श्री पं.
... जी शास्त्री को सादर जयश्रीकृष्ण
अन्य सभी प्रेमियों को जयश्रीकृष्ण।



भेजने वाले का नाम और पता :-

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये



Pt. Baijnath Shastri M.A. M.O.L.
ANANTNAG
(Kashmir)

श्री:। चौबुर्जा - भरतपुर
१-७-६०

अनन्त श्री विभूषित श्री चरणों में सादर
कोटिश: प्रणाम स्वीकृत हो। सर्वत:
कुशल मस्तु। २९-६-६० का लिखा
कृपापत्र आज मिला। पहले पत्र उत्तर
तत्काल दिया है आशा है मिला
होगा, आज स्वप्न में गुरुजी को आपके
दर्शन हुए थे, उन्होंने इसीसे यह निश्चय
कर लिया है अब स्वास्थ्य शीघ्र सुधरेगा
अतः आज कृपा पत्र तो मिल ही गया आप
चिन्ता न करें सब ठीक ही होगा अभी
कोई विशेष काम तो नहीं है गत
परसों से ज्वर आ होगया है और

आ : (चौबुजा - भरतपुर
२०-८-६८

अनन्त श्री पूज्य चरणारविन्द श्री बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मोंमें कोटिश: प्रणाम स्वीकारें सर्वत्र कुशलमस्तु। मैं १९-८-६८ को सानन्द यहां पहुँच गया हूं। १ पत्र अन्तर्देशीय भेजरहा हूं। श्री स्वामीजी कल दीग ठहर गये हैं। कृपया आप अपना स्वास्थ्य समाचार अवश्य देते रहें। श्री प० मूलचन्द जी "सरवावली" ग्राम निवासी आपको सादर प्रणाम करते रहे हैं। ३०-८-६८ के पश्चात आप अवश्यही यहां पधारें। शेष कृपा। आपका - गोविन्द:

I have already posted a letter
to Shri Swamiji, & has requested
to come to Bharatpur so that
necessary treatment may be
arranged according to his advise.
Under these circumstances
I shall be obliged if you kindly
go personally to Shri Swamiji &
request him to proceed to Bharatpur
as early as possible [illegible]
not loose Pandit [illegible]
"का वर्षा जब कृ [illegible]
explain this [illegible]
the human society [illegible]
I do admit that every [illegible]
reap his own doings [illegible]
remedies also [illegible] not eager that
he should be cured immediately
but I am very much eager that
Shri Swamiji must see him personally
& suggest what is the real trouble &
what would be the treatment. Please
once again I request you to request
Shri Swamiji to proceed to Bharatpur
immediately.

Sd/- [illegible]

Kothi Gulzar Bagh
Bharatpur.
28/?/48

My dear Mr. [illegible],

[illegible] you will be surprised to receive this letter in reply to your letter [illegible] Govind Dutt ji. Panditji has [illegible] from Delhi because he [illegible] stopped functioning in a human manner, so Babu Keshav [illegible] he insists that [illegible] return to Bharatpur. [illegible] here in the last week, & [illegible] condition is getting precarious. It is absolutely unfit to live with any human-being, unless he is kept under strict surveillance. Everyone is over worried. I will not say that he is mad, because he remembers everything & the Doctors here has advised that he should be sent to mental Hospital as early as possible, otherwise he will be incurable.

सर्वान्तर्यामी को
सेना किजिये
कहनी यह सब भी
शिर चापलय है
असु आपकी
जाने

रोग में अब सुधार है

विश्वेश्वरीत पारि पासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयतीह विश्वं
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्रा

श्री शरणजी श्री मैनजी श्री जी
श्री मनोहरजी रनों और श्री
विश्वजी सभी को प्रणाम
स्वीकार हो। सभी सर्व
आपको जय रुकार करते हैं।

श्री वर्द्ध वत्स जी को...जी को सदा सप्रेम
साते है जय श्री को गाते हो। आपका चावरेणु
...मोत्र।

श्री: । चौबुर्जी-भरतपुर
२-८-६०

आनन्द श्री विभूषित श्री चरणों
की सर्वदा जय हो।
सर्वतः कुशलान्तरं ग्रंथ
अनुमन्द मेव च

समझ में नहीं आता कि अधिक
क्या लिखूं

गुरुदेव / दया करिये अब तो
भव सागर पार लगाइये





श्रीरामजी

भरतपुर

ता० २९-१२-६०

श्री गुरुजी महाराज के चरणों में जय शंकर मालूम हो।
सर्वत: कुशलमस्तु। जैन साहब ने मोटर की आमद के विषय
1521
में पूछा मैंने उत्तर दीया कि कोई खास आमदनी नहीं है
आमद खर्च बराबर हो जाता है और लगते रहवे है उन्हो
कहा कि गाड़ी को खड़ी करदो। जनवरी का मास शुरू
हो रहा है मोटर के टेक्स के ३०६॥) जमा करने है और तनखा
देनी है अब मुझ में ताकत नहीं है जो कि मैं लगा सकू
प्रार्थना है कि मैंने आपसे पहले भी कहा था कि मुझे से
बचाओ मैंने तो कमाया थो सब लगा दीओ और बे रोजगार
भी हो गया मैंने तो आपकी शरण ली थी जैन सा०
ने भी पत्र आपको डाला बतलाया सो आप विचार करके
लिखना कि मुझे क्या आज्ञा है और मेरे ऊपर दया करके
आदर के जैसा आप चाहो इस गाड़ी को [illegible] कर देना
में बहुत परेशानी में हूं मैंने तो आपकी जैन सा० की इच्छा
के अनुसार ही काम कीया लेकिन भगवान और भाग्य
[illegible] नहीं जाती मेरे भाग्य में [illegible]

पहले यहां खोलिये To open

EXPRESS

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER





२१/१२/६०

1822

पं. गोविन्दजी मिश्र भरतपुर वाले
C/O. वैद्य बृहस्पतिदेव त्रिगुणा
भोगल रोड पो. P.O. जंगपुरा. Jangpura
देहली० १४ Delhi No. 14.

← तीसरा मोड़ Third fold →

दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—





इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

~~से~~ ज्यादा मैं क्या लिखूं आप मेरे माँ
बाप हैं मुझे ऐसा रास्ता बतलाने की कृपा
करें जिससे मैं पेट को रोटी पैदा कर सकूँ
उत्तर शीघ्र देने की कृपा करनाजी।

प्रार्थी
नन्दराम

॥श्रीः॥ भरतपुर
दिनाङ्क 1 जून 1977
(पूर्णिमा)

सेवामें,

परम श्रद्धेय श्री भगवद्पादपद्मों में करबद्ध ... शः प्रणाम एवं अनन्त जय जय श्री श्रीजी।

अत्र सर्वत्र कुशलक्षेम है। यह आपकी अनन्त कृपा ही है। श्री भगवान्‌जी से सदैव प्रार्थना है कि आपकी पावन प्रकाश सदा सदा — सभी जगह — सभी स्थितियों में और जन्म जन्मान्तरों में मार्गदर्शन करता रहे तथा अन्त में प्रकाश दिखाते हुये सभी तीर्थों के ... एवं आश्रय के प्रथम आश्रम आप स्वयं में एकाकार कर अपने में ही विलय कर लेवें। यही आपका अपना दिखाया चरम लक्ष्य है जिसे प्राप्त कर और कोई आवश्यकता अथवा चाह शेष नहीं रह जाती है। आपका अनन्त जय जयकार है। पु... एवं बारम्बार आपके चरण कमलों में ढोक अभिवादन ज्ञात हो।

श्री परीक्षितजी महाराज का यथायोग्य ... जय शङ्कर ज्ञात हो। उन्होंने आपको शिमला के पते पर पत्र प्रेषित किया था, उसके सन्दर्भ में आपका कृपा-... उपलब्ध नहीं हुआ है। आपका पावन श्री विग्रह सर्वत्र सबको प्रकाशमान कर रहा है तथा उससे जीवन मिल रहा है ... समस्त कृतार्थ हो रहे हैं।

यहाँ इस समय बहुत गर्मी ... था चुनावों की सरगर्मी भी बहुत जोरों पर है। विशेष सब आपकी कृपा है।

यहाँ से सभी का जयशङ्कर ... हो।

आपका पत्र आपके ... सेवा में प्रस्तुत है।

आपका अपना वत्स —
[signature] 1/6/77
(CHHOTEY LAL)

दीय पत्र कार्ड
ND LETTER CARD



सेवा में —

~~श्री श्रीजी महाराजजी C/o बाबूजी श्री हरीराम~~
~~शर्माजी (रिटायर्ड सहायक पंजीयक सहकारी समितियाँ~~ -
~~Retd. Asst. Registrar of Co-operative Societies)~~
~~नालागढ़ (NALAGARH) Via~~ रूपनगर (RoopNagar)
(पंजाब)

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

सन्तोष सदन मथुरा गेट,
भरतपुर (राज०)

पिन PIN 321001

1/6/77

॥श्रीः॥ भरतपुर
30.9.66

सेवामें

प्रातःस्मरणीय, श्रद्धेय एवं भगवन्
श्री श्रीजी बाबा महाराज के श्री भगवच्चरणारविन्दों
में करबद्ध साष्टाङ्ग प्रणाम ज्ञात हो।

श्री श्रीमान् १००८ भगवन्!

आपकी प्रसन्नता एवं स्वास्थ्य में सुधार होने की शुभ सूचना जब श्री पंडितजी महाराज ने सुनायी तो मैं शाश्वत हर्षोल्लास से प्लावित हो गया।

मुझे स्वयं को आपके दर्शन की अति उत्कण्ठा थी परन्तु इधर भूमि-जलमग्न होने से एवं आपके पुत्र प्रेमचन्द को उल्टी दस्त और कमजोरी लगभग एक महिने से होने से मैं असमर्थ था। अतः पंडितजी महाराज के साथ नहीं आ सका। इसको अब भी ओषधि दे रहे हैं। आपकी कृपा से हमें कोई चिन्ता नहीं है।

मैं माह दिसम्बर में एक दिन के लिये दिल्ली आऊँगा क्योंकि 'B. A. English only' परीक्षा के लिये फार्म किसी महाविद्या[लय] या बुकसेलर से लाना है और उस समयाव[धि] में आपके दर्शन-लाभ हो सके तो मैं अवश्य करूँगा। मुझे आपकी प्रेरणा ही कल्याणकारी है।

शेष आपकी कृपा-दृष्टि है।

आपका भवन्निष्ठ पुत्र-
[signature]
(छोटेलाल)

आपका मैं,
छोटेलाल,
सन्तोष सदन मथुरा गेट
भरतपुर (राज०)

पहॉं काटकर खोलिये To open cut here →

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



सेवामें

श्री श्रीजी बाबा महाराज C/o
श्री बी०डी० बक्शी जी, हिन्दुस्तान
हाउसिंग फेक्टरी, भोगल (BHOGAL)
नई दिल्ली (NEW DELHI)

← तीसरा मोड़ Third fold →

दूसरा मोड़ Second fold

भेजने वाले का नाम और पता Sender's name and address



3/9/6

छोटेलाल,
सन्तोष सदन मथुरा गेट,
भरतपुर (राज०)।

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

'Phone : 56014-15
'Grams : PAPCOMILLS

Paper & Pulp Conversions, Limited,

Regd. Office : 376, SHUKRAWAR PETH, POONA 2 (INDIA).

९-५-१९६८

सविनय नमस्कार —

आपका श्री पारखेजीको श्री परशुराम जयन्ती महोत्सव के विषयमे लिखा हुवा पत्र मिला। धन्यवाद।

श्री परशुराम जीके जीवनपर विभिन्न विद्वानोके जो प्रवचन हुवे वे सभी भाषण आप हमारे यहा भेजनेकी कृपा करे।

भवदीय

वि.भा.सावळापूरकर

वि. भा. सावळापूरकर

श्री नित्यानंद दत्त
जी-४९१ श्री निवास पुरी
नई देहली-१४

७ श्री व्ही.डी.बक्षी, हिंदुस्थान हौसिंग फॅक्टरी, जंगपुरा,
नई देहली.

श्री:| भरतपुर आ. शु. १२ भौमे
सं० २००४

पूज्य पाद्

अनन्त श्री सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री नाना महाराज के पुनीत पाद पद्मों में दास के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वतः कुशलं मस्तु / यहां का विशेष वृत्त तो श्री धनेशजी, श्रीमती रानी साहिबा के पत्रों से ज्ञात हो ही गया होगा, मैंने सेवा में २ लिफ़ाफे हरिद्वार के पते से भेजे थे किन्तु वह आप तक न पंहुचे अस्तु गत १९ ता. को श्री १०५ मानू मुझसे अलवर जाने की और दूसरे दिवस लौट आने की कह कर गये, और टिकिट फर्स्ट का बांदीकुई तक का लिया मनोहर जी साथ स्टेशन गये थे गाड़ी जाने से पूर्व ही मनोहर जी घर आ गये, गत भौम को १ लिफाफा मुझे मिला जिसमें लिखा था कि "संसार में मनुष्य अकेला पैदा होता है और अकेला ही - - - - " दूसरी पंक्ति थी कि न मैं ने किसी को प्यार किया है न करता हूं मैं ऐसी जगह जारहा हूं कि जहां कोई न जाने फकत्त) १ दिन मैं ने जैसे तैसे निकाला दोनों समय भोजन में के ४ आहुति अनिच्छा से की बुध को मैं और जुगल राम अलवर गये और वहां से बच्चों को लेकर गुरुवार को वापिस आये।क्रम:

अभी तक कोई किसी प्रकार का समाचार प्राप्त नहीं हुआ है चिन्ता दिनों दिन बढ़ती जा रही है श्रीरानी सा. दिन भर बिस्तर पर बैठी रोती रहती है बच्चे पापाजी कब आवेंगे तुम क्यों रोती हो कहते रहते है

नाथ। क्या करें कहां जांय किससे पूछे अब आपके चरणों को छोड़ कोई आश्रय हमारा नहीं है।

पत्रोत्तर अति शीघ्र दें।

रूड़ी से शिवप्रसाद जी का पत्र आया है और एक पत्र रामजी दास तथा बांके लाल का भी आया है जिसमें लिखा है कि दर्शनों की भूख लगी है।

आपका
गि. गोविन्द

समय पाकर कवालेत कररहे है नाथ।
समझमें नहीं आता क्या करूं कहां जाऊं
आशा है मेरा पहिला पत्र मिल गया होगा
अब नहीं सहा जाता है नाथ आधीक
क्या लिखूं
श्रीधनेशजी मनोहरजी चम्पालालजी
नन्दकुमार चौ. दिनेशजी आदिसभी ने
प्रणाम निवेदन कराया है।

आपका
गोविन्द

श्री रानी साहिबे को
साष्टांग प्रणाम

[illegible]

श्री:(भरतपुर द्वि॰ आ॰ कृ॰ ८ रवौ
सं॰ २००४

श्रीमान्

अनन्त श्री पूज्य पाद श्री बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में दासानु दास गोविन्द के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों / सर्वतः कुशलमस्तु / पत्र यथा समय मिल गया है उत्तर में विलम्ब के लिये क्षमा। श्री १·५ मान् का अभी कोई समाचार नहीं मिला है बड़ी भारी चिन्ता रात दिन लगी रहती है इसी कारण शरीर भी अस्वस्थ रहने लग गया है जब आप उचित समझें पधारें, वस्त्रों की आवश्यकता हो तो डाक द्वारा भेजने का प्रयत्न करूं क्यों कि वहां शीत होगा / चरण दास को मैं ने बहुत दिन से कोई पत्र नहीं लिखे है और अब आवश्यकता भी क्या है /

जाने वाले दिन ही मैं ने आपके पत्र का समाचार मौखिक उन्हें सुनाया था उस समय पत्र मेरे पास नहीं था "हरिहराश्रम, हरिद्वार यह पता भी मैं ने उन को कहा था "कन खल,, कहना भूल गया था / न जाने कब तक कहां मिलेंगे इसका कोई अनुमान नहीं है चिन्ता मोह अपना

म. स. पारखे

३७६, शुक्रवार पेठ,
पुणें २.

श्री

पूना,
दिनांक ५-८-१९६७

परमपूजनीय श्री स्वामीजी के चरण सेवामे,

साष्टांग नमस्कार.

आपका कृपा आशीर्वादात्मक पत्र प्राप्त होनेसे अत्यानंद हुवा. आपके आशीर्वाद नवदंपत्तीको भावी आयुष्यमे मार्गदर्शक ठहरेंगे.

बहुत दिनोसे आपके दर्शनका लाभ मिला नही. इस मासअखेर दिल्ली आनेका विचार कर रहाहूं. उस समय तक यदि आपका वास्तव्य वहां रहेंगा तो आपसे कुछ बोधप्रद शब्द सुननेका भाग्य प्राप्त होंगा.

पीछले संक्रमणके समय भार्गव सहस्त्र नामावली व सहस्त्र-नाम मुद्रीत करनेका परमभाग्य परम सद्गुरु श्रीगजानन महाराज के कृपासे प्राप्त हुवा था. उस वख्त श्री बक्षीजी के पास भेजी हुवी कुछ प्रतियाँ आपके अवलोकनमे आई अथवा नही यह पता नही. आज सहस्त्र नामावली की ५ प्रतियाँ व उसी समय किये हुवे मेरे भाषणकी प्रतीयाँ अलग डाकसे भेजी है.

आपका कृपाभिलाषी

म. स. पारखे

स्वामी श्री अमृतवाग्भवाचार्य
द्वारा श्री. व्ही. डी. बक्षी,
हिंदुस्थान हाऊसिंग फॅक्टरी,
जंगपूरा,
नई दिल्ली.

श्री गजानन प्रसन्न

पूना
20 - 12 - ६८.

परम् पूजनीय श्री स्वामीजीके चरण सेवामे
साष्टांग दंडवत् -

परसो मै दिल्लीसे वापीस आया. श्री बद्रीजीसे भेट हुई थी. पता चला कि, आप सिंकंदराबाद गये हुये है. आपका पता भी उन्हीसे प्राप्त हुवा. लौटनेपर श्री पारखेजी के नाम लिखा हुवा आपका पत्र भी मिला. श्री पारखेजी दत्तजयंती निमित्त अक्कलकोट गये हुये है. आज कल मे लौटेंगेही.

परम सद्गुरु श्री गजानन महाराज २७ ता. को यहा आयेंगे और आगे सौराष्ट्र जायेंगे. श्री पारखेजी भी शायद उन्हीके साथ होंगे. आप दिल्ली लौटते समय कहीसे (कृपासे) पूना अवश्य आईये. आप जिस दिन यहा आयेंगे उसदिन पारखेजी यहां आनेकी कोशिस जरुर करेंगे. यदि वो नभी हो तो श्री सुधाकर मिसेसपारखे अथवा हममेसे कोईना कोई तो जरुरही होंगे. आप अवश्य आईये. आपके कार्यक्रम की सूचना देनेकी कृपा करे.

आपकी कृपासे सबठिक चलरहा है.

आपका. कृपाभिलाषी.
विश्वनाथ सावळापूरकर